(३) इल्तुतमिश ने शासन-व्यवस्था संगठित की

यद्यपि इल्तुतमिश का सम्पूर्ण समय नवजात मुस्लिम साम्राज्य की रक्षा में ही निकल गया लेकिन शासन-व्यवस्था की ओर से वह बिलकुल उदासीन रहा हो, ऐसी बात नहीं थी। उसने अपनी आन्तरिक स्थिति मजबूत करने के लिए अपने समर्थक अमीरों का दल संगठित किया और खलीफा की मान्यता प्राप्त करके अपनी प्रतिष्ठा में वृद्धि की।

भारत में मुस्लिम सत्ता का वास्तविक संस्थापक कौन था, इस पर विचार करते हुए सर बूल्जली हेग ने लिखा है कि "वह गुलाम सुल्तानों में सर्वश्रेष्ठ था। उसके कार्य उसके स्वामी के समान नहीं थे। ऐबक के समान उसे एक विशाल साम्राज्य की नैतिक तथा आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं थी। उसने जो कुछ किया वह अपने बल पर किया और कठिनाइयों के होते हुए भी किया तथा उसने ऐबक के संगठनहीन तथा एकताहीन साम्राज्य में सिन्ध तथा मालवा को भी संयुक्त किया। अपने स्वामी की अपेक्षा वह अधिक उदार था।" डा० ईश्वरी प्रसाद तथा लेनपूल भी इस मत से सहमत हैं, क्योंकि कुतुबुद्दीन को तुर्क साम्राज्य को दृढ़ करने का अवसर उसी प्रकार प्राप्त नहीं हुआ था जिस प्रकार बाबर को। जिस प्रकार इतिहासकार अकबर को मुगल साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक मानते हैं, उसी प्रकार इल्तुतमिश तुर्क साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

इल्तुतमिश का मूल्यांकन

इल्तुतमिश का चरित्र तथा व्यक्तित्व बहुत ऊँचा था। उसने नव-स्थापित मुस्लिम राज्य को नष्ट होने से बचाया।

(१) नवजात मुस्लिम राज्य का रक्षक

इल्तुतमिश को भारत में नवजात मुस्लिम राज्य का रक्षक बताया जाता है। राजस्थान व दोआब के जो भाग सल्तनत से अलग हो गए थे, इल्तुतमिश ने उनको फिर से जीता। उसने विद्रोहियों का दमन किया और मंगोल आक्रमण से अपने राज्य को बचाया। यदि इस समय दिल्ली की गद्दी पर इल्तुतमिश जैसा योग्य शासक न बैठा होता तो निश्चय ही सल्तनत नष्ट हो गई होती। An Advanced History of India के लेखकों ने इल्तुतमिश के कार्यों का मूल्यांकन बिल्कुल सही किया है। "भारत में नवजात मुस्लिम राज्य को विघटन से बचाने का श्रेय उसी को (इल्तुतमिश को) दिया जाना चाहिए। उसने कुतुबुद्दीन की सैन्य-सफलताओं को संगठित करके एक शक्तिशाली और सुदृढ़ राजतन्त्र का निर्माण किया। उसकी मृत्यु के समय भारत में मुस्लिम राज्य सम्पूर्ण उत्तरी भारत तक फैला हुआ था।"

"To him belongs the credit of having saved the infant Muslim dominion in India from disruption and of having consolidated the conquests, of Qutub-ud-din into a strong and compact monarchy extending at his death over the whole of Hindustan."

—R. C. Majumdar and Raychaudhary.

(२) न्यायप्रिय और दयालु शासक

इल्तुतमिश अत्यन्त न्यायप्रिय शासक था। उसकी न्यायप्रियता की बहुत-सी कहानियाँ चल निकलीं, जिसका उल्लेख बाद के मुस्लिम इतिहासकारों ने भी किया